॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

कृष्णयजुर्वेदीय

नारायणोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

भगवान् नारायणकी सर्वकारणता एवं सर्वरूपता; अष्टाक्षर नारायण-मन्त्रका स्वरूप और महिमा

ॐ इस परमात्माके नामका स्मरण करके अब नारायणोपनिषद् आरम्भ किया जाता है। निश्चय ही भगवान् नारायण सबके शरीरोंमें शयन करनेवाले अन्तर्यामी आत्मा हैं। उन्होंने संकल्प किया—'मैं जीवोंकी सृष्टि करूँ।' अतः उन्हींसे सबकी उत्पत्ति हुई है। नारायणसे ही समष्टिगत प्राण उत्पन्न होता है, उन्हींसे मन और सम्पूर्ण इन्द्रियाँ प्रकट होती हैं। आकाश, वायु, तेज, जल तथा सम्पूर्ण विश्वको धारण करनेवाली पृथ्वी—इन सबकी नारायणसे ही उत्पत्ति होती है। नारायणसे ब्रह्मा उत्पन्न होते हैं। नारायणसे शिवजी प्रकट होते हैं। नारायणसे इन्द्रका जन्म होता है। नारायणसे प्रजापति उत्पन्न होते हैं। नारायणसे ही बारह आदित्य प्रकट हुए हैं। ग्यारह रुद्र, आठ वसु और सम्पूर्ण छन्द (वेद) नारायणसे ही उत्पन्न होते हैं, नारायणसे ही प्रेरित होकर अपने-अपने कार्यमें प्रवृत्त होते हैं और नारायणमें ही लीन हो जाते हैं। यह ऋग्वेदीय उपनिषद्का कथन है॥ १॥

भगवान् नारायण नित्य हैं। ब्रह्मा नारायण हैं। शिव भी नारायण हैं। इन्द्र भी नारायण हैं। काल भी नारायण हैं। दिशाएँ भी नारायण हैं। विदिशाएँ (दिशाओंके बीचके कोण) भी नारायण हैं। ऊपर भी नारायण हैं। नीचे भी नारायण हैं। भीतर और बाहर भी नारायण हैं। जो कुछ हो चुका है तथा जो कुछ हो रहा है और होनेवाला है, यह सब भगवान् नारायण ही हैं। एकमात्र नारायण ही निष्कलङ्क, निरञ्जन, निर्विकल्प, अनिर्वचनीय एवं विशुद्ध देव हैं; उनके सिवा दूसरा कोई नहीं है। जो इस प्रकार जानता है, वह विष्णु ही हो जाता है, वह विष्णु ही हो जाता है। यह यजुर्वेदीय उपनिषद्का प्रतिपादन है॥ २॥

सबसे पहले '**ॐ**' इस अक्षरका उच्चारण करे, इसके बाद '**नमः**' पदका, फिर अन्तमें '**नारायणाय**' इस पदका उच्चारण करे। '**ॐ**' यह एक अक्षर है। '**नमः**' ये दो अक्षर हैं। '**नारायणाय**' ये पाँच अक्षर हैं। यह '**ॐ नमो नारायणाय**' पद भगवान् नारायणका अष्टाक्षरमन्त्र है। निश्चय ही, जो मनुष्य भगवान् नारायणके इस अष्टाक्षरमन्त्रका जप करता है, वह उत्तम कीर्तिसे युक्त हो पूरी आयुतक जीवित रहता है। जीवोंका आधिपत्य, धनकी वृद्धि, गौ आदि पशुओंका स्वामित्व—ये सब भी उसे प्राप्त होते हैं। तदनन्तर वह अमृतत्वको प्राप्त होता है, अमृतत्वको प्राप्त होता है (अर्थात् भगवान् नारायणके अमृतमय परमधाममें जाकर परमानन्दका अनुभव करता है)। यह सामवेदीय उपनिषद्का कथन है॥ ३॥

आन्तरिक आनन्दमय ब्रह्मपुरुष प्रणवस्वरूप है;

'अ' 'उ' 'म'—ये उसकी मात्राएँ हैं। ये अनेक हैं; इनका ही सम्मिलित रूप '**ॐ**' इस प्रकार हुआ है। इस प्रणवका जप करके योगी जन्म-मृत्युरूप संसार-बन्धनसे मुक्त हो जाता है '**ॐ नमो नारायणाय**' इस मन्त्रकी उपासना करनेवाला साधक वैकुण्ठधाममें जायगा। वह यह वैकुण्ठधाम विज्ञानघन पुण्डरीक (कमल) है; अतः इसका स्वरूप विद्युत्के समान परम प्रकाशमय है। देवकीनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण ब्रह्मण्य (ब्राह्मणप्रिय) हैं। भगवान् मधुसूदन ब्रह्मण्य हैं। पुण्डरीक (कमल)-के सदृश नेत्रोंवाले भगवान् विष्णु ब्रह्मण्य हैं। अच्युत विष्णु ब्रह्मण्य हैं। सम्पूर्ण भूतोंमें स्थित एक ही नारायणदेव कारणपुरुष हैं। वे ही कारणरहित परब्रह्म हैं। ॐ यह अथर्ववेदीय उपनिषद्का प्रतिपादन है॥ ४॥

प्रातःकाल इस उपनिषद्का पाठ करनेवाला पुरुष रात्रिमें किये हुए पापका नाश कर डालता है। सायंकालमें इसका पाठ करनेवाला मनुष्य दिनमें किये हुए पापका नाश कर डालता है। सायंकाल और प्रातःकाल दोनों समय पाठ करनेवाला साधक पहलेका पापी हो तो भी निष्पाप हो जाता है। दोपहरके समय भगवान् सूर्यकी ओर मुख करके पाठ करनेवाला मानव पाँच महापातकों और उपपातकोंसे सर्वथा मुक्त हो जाता है। सम्पूर्ण वेदोंके पाठका पुण्य-लाभ करता है। और अन्तमें भगवान् श्रीनारायणका सायुज्य प्राप्त कर लेता है; जो इस प्रकार जानता है, वह भी श्रीमन्नारायणका सायुज्य प्राप्त कर लेता है॥ ५॥

॥ कृष्णयजुर्वेदीय नारायणोपनिषद् समाप्त॥

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

श्रीनारायणके ध्यानसे मुक्ति

अथ यदिदं ब्रह्मपुरं पुण्डरीकं तस्मात्त-
डिदाभमात्रं दीपवत्प्रकाशम्।
ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः।
ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो ब्रह्मण्यो विष्णुरच्युतः॥
सर्वभूतस्थमेकं नारायणं कारणपुरुषमकारणं परं ब्रह्मों।
शोकमोहविनिर्मुक्तो विष्णुं ध्यायन्न सीदति॥

(आत्मप्रबोध०)

'अब जो यह ब्रह्मपुर-कमल है, उसमें विद्युत्की आभामात्र दीपकके समान प्रकाशरूप, ब्राह्मणोंके प्रिय अथवा ब्राह्मण जिनको प्रिय हैं, ऐसे देवकीनन्दन, ब्रह्मण्य मधुसूदन, ब्रह्मण्य कमलनयन अच्युत विष्णु भगवान् हैं। (उन) सर्वभूतोंमें स्थित एकमात्र कारणपुरुष कारणरहित परब्रह्म नारायण विष्णुका जो ध्यान करता है, वह शोक-मोहसे छूट जाता है और कोई कष्ट नहीं पाता।'